UP Board Class 6 Geography Notes Chapter 9 भारत: जलवायु

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने भारत की जलवायु को निम्नलिखित चार ऋतुओं में बाँटा है–
1. शीत ऋतु
2. ग्रीष्म ऋतु
3. वर्षा ऋतु
4. शरद ऋतु

1. शीत ऋतु

शीत ऋतु उत्तरी भारत में नवंबर के मध्य से शुरु होकर फरवरी के महीने तक रहती है। शीत ऋतु में तापमान दक्षिण से उत्तर की तरफ बढ़ने के साथ कम होने लगता है। इस ऋतु में पूर्वी तट पर औसत तापमान 24° से 25° सेल्सियस जबकि उत्तर के मैदानी इलाकों में 10°–15° सेल्सियस के बीच रहता है। दिन अपेक्षाकृत गर्म रहते हैं और रातें अपेक्षाकृत ठंडी होती हैं। शीत ऋतु में उत्तरी इलाकों में कोहरा और हिमालय की ऊपरी ढालों पर बर्फबारी सामान्य बात होती है।

इस मौसम में, देश में उत्तर–पूर्वी व्यापारिक पवनें (Trade Winds) प्रबल रहती हैं। ये पवनें जमीन से समुद्र की ओर बहती हैं और इसलिए देश के ज्यादातर हिस्सों के लिए यह शुष्क मौसम होता है। इन हवाओं की वजह से तमिलनाडु के तटीय इलाकों में शीत ऋतु में कुछ वर्षा होती है । देश के उत्तरी भाग में इस समय उच्च दबाव का क्षेत्र विकसित होता है। इस मौसम में आसमान आम तौर पर साफ रहता है, तापमान और आर्द्रता कम होती है और हल्की हवाएं चलती हैं।

उत्तर के मैदानी इलाकों में पश्चिम और उत्तर-पश्चिम से चक्रवाती विक्षोभों का प्रवाह इस मौसम की विशेषता है। इन्हें पश्चिमी विक्षोभ भी कहा जाता है | निम्न–दबाव वाली ये प्रणालियां भूमध्य सागर और पश्चिम एशिया के ऊपर बनती हैं और पश्चिमी प्रवाह के साथ भारत में प्रवेश करती हैं।

इनके कारण उत्तर के मैदानी इलाकों में शीत ऋतु में बारिश होती है और पहाड़ों पर बर्फबारी होती है। वास्तव में उत्तरी भारत की तुलना में भारत के प्रायद्वीपीय इलाकों में शीत ऋतु के दौरान , समुद्र के समकारी प्रभाव के कारण, तापमान के प्रारूप में मौसमी परिवर्तन बहुत ही कम होता है।

2. ग्रीष्म ऋतु

ग्रीष्म ऋतु मार्च से शुरु होती है और जून-जुलाई तक रहती है। इस समय 'ग्रीष्म संक्रांति' (Summer Solistice) के कारण सम्पूर्ण भारत तापमान में वृद्धि का अनुभव करता है। इस मौसम में भारत के उत्तर और उत्तर– पश्चिम भाग में दिन के समय बेहद गर्म हवाएं चलती हैं, जिन्हें 'लू' कहा जाता है। इस मौसम में चूंकि सूर्य का उत्तरायण हो जाता है और अंतरा–उष्णकटिबंधीय कन्वर्जेंस जोन (आईटीसीजेड) उत्तर की ओर बढ़ना शुरु कर देता है और जुलाई में 250 उ. अक्षांश के ऊपर स्थित हो जाता है।

3. वर्षा ऋतु

वर्षा ऋतु मध्य जून से शुरु होकर सितंबर के महीने तक रहती है, और इस मौसम में होने वाली वर्षा का संबंध दक्षिण–पश्चिम मॉनसून के भारत में प्रवेश करने से है । इस मौसम के दौरान, उत्तर के मैदानी इलाकों के ऊपर निम्न–दबाव का क्षेत्र निर्मित हो जाता है, जो दक्षिणी गोलार्द्ध की व्यापरिक पवनों को अपनी ओर आकर्षित करता है। दक्षिणी गोलार्ध की दक्षिण–पूर्वी व्यापारिक पवनें भूमध्य रेखा को पार करती हैं और दक्षिण–पश्चिम दिशा में बहती हुई भारतीय प्रायद्वीप में दक्षिण–पश्चिम मॉनसून के रूप में प्रवेश करती हैं। भारत में दक्षिण–पश्चिम मॉनसून के आने से मौसम में पूरी तरह से परिवर्तन हो जाता है | खासी हिल्स की दक्षिण पवर्तमाला मासिनराम में दुनिया की सबसे अधिक औसत वर्षा होती है। गंगा घाटी में वर्षा पूर्व से पश्चिम की तरफ कम होती जाती है। भारत में दक्षिण–पश्चिम मॉनसून दो शाखाओं– अरब सागर शाखा और बंगाल की खाड़ी शाखा, के माध्यम से आगे बढ़ता है।

4. शरद ऋतु
शरद ऋतु वर्षा ऋतु के बाद अक्टूबर से शुरु होकर दिसंबर की शुरुआत तक रहती है। दक्षिण–पश्चिम मॉनसून के धीरे– धीरे भारत से वापस जाने की वजह से इसे अक्सर 'मॉनसून निवर्तन (Retreating) की ऋतु' कहा जाता है। इस मौसम में उत्तरी भारत में वर्षा नहीं होतीहै, लेकिन बंगाल की खाड़ी में कई चक्रवात पैदा होते हैं जो पूर्वी तट के साथ उत्तर– पश्चिम से उत्तर– पूर्व की ओर बढ़ते हैं और तमिलनाडु के तट एवं श्रीलंका में वर्षा करते हैं।

भारत की जलवायु

किसी स्थान अथवा देश में लम्बे समय के तापमान, वर्षा, वायुमण्डलीय दबाब तथा पवनों की दिशा व वेग का अध्ययन व विश्लेषण जलवायु कहलाता है। सम्पूर्ण भारत को जलवायु की दृष्टि से उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु वाला देश माना जाता है।

भारत में उष्ण कटिबंधीय मानसूनी जलवायु पायी जाती है। मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के 'मौसिम' शब्द से हुई है। मौसिम शब्द का अर्थ पवनों की दिशा का मौसम के अनुसार उलट जाना होता है। भारत में अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी से चलने वाली हवाओं की दिशा में ऋतुवत् परिवर्तन हो जाता है, इसी संदर्भ में भारतीय जलवायु को मानसूनी जलवायु कहा जाता है।

ग्रीष्म ऋतु की हवाएं

ग्रीष्म ऋतु भारत की प्रमुख 4 ऋतुओं में से एक ऋतु है। भारतीय गणना के अनुसार ज्येष्ठ-आषाढ़ के महीनों में ग्रीष्म ऋतु होती है। ग्रीष्म ऋतु में मानूसन के आगमन के पूर्व पश्चिमी तटीय मैदानी भागों में भी कुछ वर्षा प्राप्त होती है, जिसे 'मैंगों शावर' कहा जाता है। इसके अतिरिक्त असम तथा पश्चिम बंगाल राज्यों में भी तीव्र एवं आर्द्र हवाएं चलने लगती हैं, जिनसे गरज के साथ वर्षा हो जाती है। यह वर्षा असम में 'चाय वर्षा' कहलाती है। इन हवाओं को 'नारवेस्टर' अथवा 'काल वैशाखी' के नाम से जाना जाता है। यह वर्षा पूर्व-मानसून वर्षा कहलाती है।

मानसूनी हवाएँ

मानसून या पावस, मूलतः एवं अरब सागर की ओर से भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर आने वाली हवाओं को कहते हैं जो भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि में भारी वर्षा करातीं हैं। ये ऐसी मौसमी पवन होती हैं, जो दक्षिणी एशिया क्षेत्र में जून से सितंबर तक, प्रायः चार माह सक्रिय रहती है।
भारत की जलवायु गर्म है, इसलिए यहां पर दो तरह की मानसूनी हवाएं चलती हैं। जून से सितंबर तक चलने वाली मानसूनी हवाएं दक्षिणी पश्चिमी मानसून कहलाती हैं, जबकि ठंडी में चलने वाली मानसूनी हवा, जो मैदान से सागर की ओर चलती है, उसे उत्तर-पूर्वी मानसून कहते हैं। यहां पर अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून से ही होती है।

https://www.evidyarthi.in/